Indian J. Soc. & Pol. 12 (01):103-106:2025 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
July-December 2024 (31 March 2025) **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

भारतीय ज्ञान प्रणाली में झारखण्ड की जनजातियों की भूमिका

मालवी विश्वकर्मा[1], एस.एम. अब्बास[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर,मानवशास्त्र विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड, भारत
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर, मानवशास्त्र विभाग, डी.एस.पी.एम.यू. राँची, झारखण्ड, भारत

ABSTRACT

भारतीय ज्ञान प्रणाली हमारे देश में पीढ़ी–दर–पीढ़ी चले आ रहे ज्ञान को संरक्षित, प्रोत्साहित और संवर्द्धित करने की एक कार्ययोजना है। यह ज्ञान प्रणाली पूर्णतः भारतीय है। यह भारत और विश्व की वर्तमान एवं भावी समस्याओं को हल करने में इसके उपयोग को बढ़ावा देने के साथ ही भारतीय ज्ञान प्रणाली को मुख्यधारा में लाकर समकालीन दुनिया के संदर्भ में ठोस बदलाव लाने का एक प्रयास भी है। इसी के महत्वपूर्ण अंग के रूप में झारखण्ड की जनजातियों की ज्ञान प्रणाली एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है जिसने कला, आजीविका के साधन, वन एवं पशुओं के संरक्षण, सामुदायिक चिकित्सा प्रणाली, साहित्य, पारंपरिक न्याय व्यवस्था इत्यादि के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली को समृद्ध किया है। यह ज्ञान लिखित और अलिखित दोनों रूपों में है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होती है। जनजातीय ज्ञान प्रणाली भारतीय ज्ञान प्रणाली के उद्भव एवं विकास को समझने का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है क्योंकि यह आज भी अपने प्राचीन स्वरूप में है जब भारतीय ज्ञान प्रणाली अपने उद्भव काल में थी परंतु जनजातियों के देशज ज्ञान में शोधकार्य में विशेष ध्यान नहीं दिया गया जिसके कारण इसके विभिन्न आयाम आज भी भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंग नहीं बन पाये हैं। आवश्यकता है कि जनजातियों के देशज ज्ञान के क्षेत्र में शोधकार्य को बढ़ावा दिया जाय जिससे भारतीय ज्ञान प्रणाली और समृद्ध हो सके। साथ ही इस ज्ञान का उपयोग समकालीन समस्याओं के निदान हेतु किया जा सकता है।प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य झारखण्ड की जनजातियों के पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को प्रकाश में लाना तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली के संदर्भ में इसकी महती भूमिका को उजागर करना है। इस शोधपत्र को तैयार करने हेतु प्राथमिक स्त्रोत एवं द्वितीय स्त्रोतों का उपयोग किया गया है।

KEYWORDS : *भारतीय ज्ञान प्रणाली, जनजाति, सामुदायिक चिकित्सा प्रणाली, आजीविका, साहित्य, पारंपरिक न्याय व्यवस्था*

भारतीय ज्ञान प्रणाली हमारे देश में पीढ़ी–दर–पीढ़ी चले आ रहे ज्ञान को संरक्षित, प्रोत्साहित और संवर्द्धित करने की एक कार्ययोजना है। यह ज्ञान प्रणाली पूर्णतः भारतीय है। यह भारत और विश्व की वर्तमान एवं भावी समस्याओं को हल करने में इसके उपयोग को बढ़ावा देने के साथ ही भारतीय ज्ञान प्रणाली को मुख्यधारा में लाकर समकालीन दुनिया के संदर्भ में ठोस बदलाव लाने का एक प्रयास भी है। इसी के महत्वपूर्ण अंग के रूप में झारखण्ड की जनजातियों की ज्ञान प्रणाली एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है जिसने कला, आजीविका के साधन, वन एवं पशुओं के संरक्षण, सामुदायिक चिकित्सा प्रणाली, साहित्य, पारंपरिक न्याय व्यवस्था इत्यादि के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली को समृद्ध किया है। यह ज्ञान लिखित और अलिखित दोनों रूपों में है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होती है। जनजातीय ज्ञान प्रणाली भारतीय ज्ञान प्रणाली के उद्भव एवं विकास को समझने का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है क्योंकि यह आज भी अपने प्राचीन स्वरूप में है जब भारतीय ज्ञान प्रणाली अपने उद्भव काल में थी परंतु जनजातियों के देशज ज्ञान में शोधकार्य में विशेष ध्यान नहीं दिया गया जिसके कारण इसके विभिन्न आयाम आज भी भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंग नहीं बन पाये हैं। आवश्यकता है कि जनजातियों के देशज ज्ञान के क्षेत्र में शोधकार्य को बढ़ावा दिया जाय जिससे भारतीय ज्ञान प्रणाली और समृद्ध हो सके। साथ ही इस ज्ञान का उपयोग समकालीन समस्याओं के निदान हेतु किया जा सकता है।

भारतीय ज्ञान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय ज्ञान प्रणाली विभागकी स्थापना अक्टूबर 2020 में की गई थी। यह तीन मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित है–

भारतीय ज्ञान को और समृद्ध करने में झारखण्ड की जनजातियों की महती भूमिका है। अपने पारपंरिक देशज ज्ञान के बल पर आदिकाल से ये सफलतापूर्वक न केवल अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं वरन् इन्होंने जल, जंगल, जमीन के माध्यम से अपने देशज ज्ञान का विस्तार भी किया है।

सामान्यतः जनजाति एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों का एक समूह है जिसका एक विशिष्ट नाम होता है, अपनी संस्कृति होती है, अपनी एक भाषा होती है तथा अपना एक विशिष्ट राजनीतिक संगठन होता है। 2011 की जनगणना के अनुसार, झारखण्ड की कुल जनसंख्या का 26.2% जनजातीय जनसंख्या है। यहाँ 33 जनजातियाँ निवास करती हैं जिनमें से 08

1: Corresponding Author

विशेष रूप से पिछड़े जनजातीय समूह की श्रेणी में आते हैं जो अन्य से भी काफी पिछड़ी अवस्था में हैं। वर्ष 2014 में राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की अनुशंसा पर भोगता समुदाय को 08 अप्रैल 2022 को भारत के राजपत्र में अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता दी गई तथा उसके पश्चात् वर्ष 2022 में ही इसे झारखण्ड सरकार ने अनुसूचित जनजाति का दर्जा दे दिया। इन्होंने ने कला, आजीविका के विभिन्न साधनों, वन एवं पशुओं के संरक्षण, सामुदायिक चिकित्सा प्रणाली, पारंपरिक न्याय व्यवस्था इत्यादि के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली को समृद्ध किया है। यह ज्ञान अलिखित और लिखित दोनों रूपों में है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होती है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य झारखण्ड की जनजातियों के पारपंरिक ज्ञान प्रणाली को प्रकाश में लाना है।

- भारतीय ज्ञान प्रणाली के महत्वपूर्ण अंग के रूप में जनजातियों के देशज ज्ञान को समाहित करना

  जनजातियों के देशज ज्ञान या पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को विशिष्ट पहचान देना

- जनजातियों के देशज ज्ञान में शोध को बढ़ावा देना

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र तैयार करने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। राँची जिलातंर्गत टुंडी प्रखण्ड के जीतपुर और बंगारो पंचायत का चयन क्षेत्रकार्य हेतु किया गया। साक्षात्कार, अनुसूची, वैयक्तिक अध्ययन, अवलोकन के माध्यम से तथ्य एकत्रित किये गये। इसके साथ ही शोध विषय से संबंधित पुस्तकें, आर्टिकल का उपयोग द्वितीय स्त्रोत के रूप में किया गया है।

विश्लेषण

झारखण्ड में मुण्डा, उराँव, संथाल, हो, खड़िया, चिक बड़ाईक, कोरबा, असुर, करमाली तथा अन्य जनजातियाँ आदिकाल से निवास करती आई हैं। इनकी संस्कृति पूर्णतः जंगल, पहाड़ों प्रकृति पर निर्भर रही हैं। प्रकृति और इनके बीच अन्योन्याश्रय संबंध रहा है। इस साहचर्य के कारण ही इन्होंने अपने देशज ज्ञान का आविष्कार किया, उसका संवर्द्धन किया। जनजातियों की ज्ञान प्रणाली का विश्लेषण निम्नलिखित बिन्दुओं के अंतर्गत किया जा सकता है–

पेड़–पौधों एवं पशुओं का संरक्षण

आदिवासी समुदाय में प्रकृति उनके जीवन दर्शन के केन्द्र में स्थित है। उनकी आस्था का केन्द्र भी प्रकृति ही है। इसलिए इसमें उपस्थित अनेक तत्वों को समुदाय विशेष के साथ जोड़ दिया गया जिसे गोत्रचिह्न या टोटम कहते हैं। एक टोटम को माननेवाले 'गोत्र' कहलाते हैं। गोत्र के लोग अपने गोत्रचिह्न के प्रति श्रद्धा का भाव रखते हैं तथा उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाते हैं। उदाहरण के लिए 'मिंज' एक गोत्र है जिसका टोटम डुगडुगिया मछली है। 'लकड़ा' गोत्र का बाघ, 'पन्ना' गोत्र का लोहा, 'तिग्गा' गोत्र का बंदर है। इस प्रकार ये स्वाभाविक रूप से पर्यावरण के संरक्षक हो जाते हैं। जिस भी पशु या पेड़ पौधे से गोत्र जुड़ता है उसकी पूजा की जाती है। इससे जंगल कटने से बचते हैं और खाद्य जाल बना रहता है। आज औद्योगीकरण, शहरीकरण विकास के नाम पर पेड़ जंगल काटे जा रहे हैं वहीं आदिवासी समुदाय अपनी संस्कृति के जरिये सदियों से जैव–विविधता का संरक्षण करते आ रहे हैं।

ामुदायिक चिकित्सा

झारखण्ड का आदिवासी समुदाय अपने चिकित्सीय ज्ञान में बहुत ही समृद्ध है। जंगल में उपलब्ध पेड़–पौधों, पती फुल झाड़ियों, छाल, जड़ों से अनेक प्रकार की औषधियाँ बनाते हैं जिनका कोई साइड इफेक्ट नहीं होता है। ये रोगों को दबाती नहीं हैं वरन् इन्हें जड़ से समाप्त करती है।

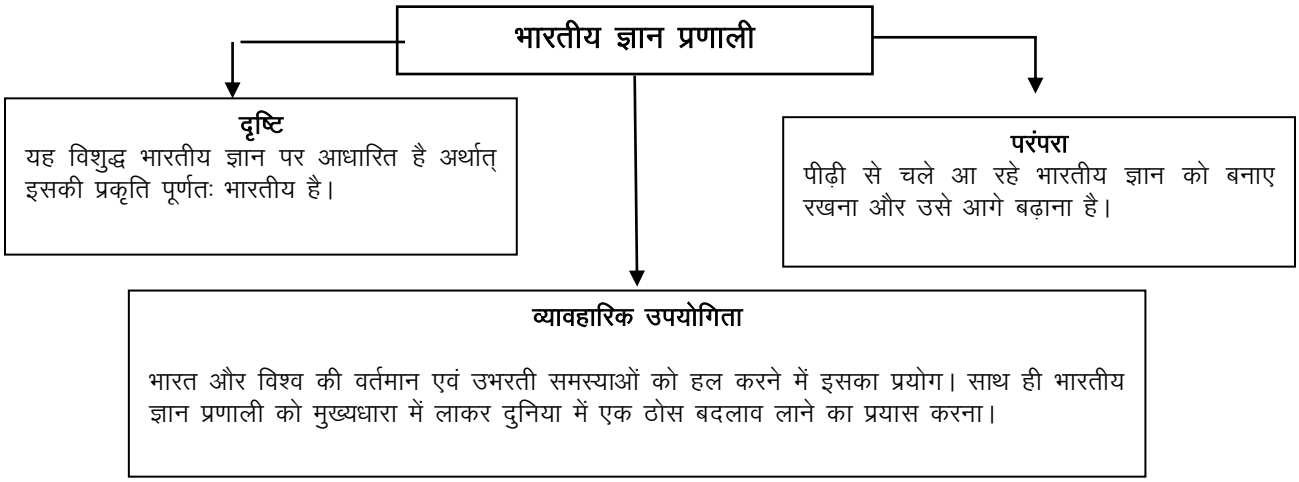

कुछ औषधीय पौधे इस प्रकार हैं–

अर्जुन पेड़ की छाल को गुड़ में मिलाकर प्रतिदिन खाली पेट सुबह पीने से हृदय रोग की बीमारी ठीक होती हैं। इसके अलावा ज्वर, हड्डी टूटने और अंदरूनी चोट में भी यह लाभकारी है।

अश्वगंधा की जड़ गठिया रोग और दुर्बलता में उपयोगी होती है। इसका फल पाचन और फेफड़े संबंधी बीमारी में काफी उपयोगी होता हैं।

अकवन (कैलोट्रोपिस गिगांटीआ) के पत्ते को पानी में उबालकर पीने से सूखा खाँसी ठीक हो जाती है। इसकी जड़ और पत्तियों का लेप मांसपेशियों का दर्द ठीक करता है।

करंज का दातून पायरिया रोग ठीक करता है। इसका तेल चर्म रोग में भी उपयोगी होता हैं। सिंदवार, ब्राह्मणी जड़ के चूर्ण को इसके तेल में मिलाकर लगाने से सफेद दाग ठीक होता है।

कुनैन (सिंकोना ओफिसीनेलिस) की छाल मलेरिया ज्वर नाशक होती हैं। निमोनिया, पेचिश, और नेत्ररोग में भी यह फायदेमंद है।

गुलर (फिकस ग्लोमीराटा) मासिक धर्म को ठीक करने के साथ पेट की गड़बड़ी को दूर करता है। साथ ही गर्भावस्था में यह उल्टी रोकता है।

चिरैता (स्वेटिया चिराटा) का प्रयोग अतिसार, रक्त को साफ करने में किया जाता है। इसका काढ़ा मलेरिया रोग को ठीक करता है।

चाकोड़ साग (केसिया होरा) तथा कुर्थी दाल के सेवन से पेट का पथरी रोग ठीक हो जाता है।

फुटकल (फिकस इंफेक्टोरिया) के नये कोमल पत्ते को माड़ के साथ मिलाकर खाने से पेट की गर्मी ठीक होती है।

बेंगसाग (सेंटिता एसिआसिका) भूखवर्द्धक होता है।

हड़ जोड़वा (सीजन पिलोस पारिएसस) की लता को पीसकर लेई जैसा बनाकर **महुआ तेल** में पका लिया जाता है तथा उसे टूटे हुए स्थान पर लगाया जाता है जिससे हड्डी जुड़ जाती है।

हर्रा (टर्मिनालिया छेबुला) को आग में पकाकर चूसने से सर्दी, खासी, गैस की शिकायत, अनिद्रा जैसी बीमारी दूर होती है।

सोंठ (जिंजीबार ओफिसीनेल) सर्दी, खांसी, दस्त, हिचकी की अचूक दवा है।

इसके अतिरिक्त बहुत सी अन्य औषधियाँ हैं जिनकी जानकारी इन्हें हैं। इसका उपयोग विश्व स्तर पर कई बीमारियों के इलाज में किया जा सकता है जिसने वैज्ञानिक अनुसंधान के द्वार खोल दिये हैं।

कला एवं शिल्प

झारखण्ड की जनजातीय कला और शिल्प भौगोलिक वातावरण तथा पारंपरिक तकनीकों पर आधारित होती है। इसके अंतर्गत मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य आदि विधाएँ आती हैं जिसमें उन्होंने दक्षता प्राप्त की है। सोहराई चित्रकला धान की कटाई के जश्न और प्रकृति के प्रति आभार प्रकट करने के लिए महिलाओं द्वारा घर की दीवारों पर बनाया जाता है। ये प्राकृतिक स्त्रोतों जैसे आयरन ऑक्साइड के अयस्क से लाल रंग, मैंगनीज से भरपूर मिट्टी से काला रंग और दुधी मिट्टी (काओलिन) से सफेद रंग प्राप्त करते हैं। झारखण्ड की एकमात्र जीआई टैग (GI Tag) प्राप्त इस कला को समय के साथ कपड़ों पर भी उतारा गया है। साड़ी, स्टॉल, स्कार्फ, दुपटा आदि पर यह पेंटिंग की जाने लगी है क्योंकि इसे केवल दीवारों पर ही जिंदा नहीं रखा जा सकता है।

कई जनजातियाँ अपने शरीर पर गोदना कला के माध्यम से चित्र बनाते हैं जो पूरी तरह पारंपरिक होता है। इनकी मान्यता है कि मृत्यु के पश्चात् शरीर नष्ट हो जाता है लेकिन गोदना ही मनुष्य के साथ आगे जाता है। यह उसकी पहचान होती है।

नृत्यकला के अंतर्गत पाइका, छऊ, सरहुल, करमा आदि आते हैं जो विश्व स्तर पर ख्यातिप्राप्त हैं। ये मानसिक एवं शारीरिक स्वस्थता के साथ ही प्रकृति प्रेम और उनके प्रति श्रद्धा का संदेश देते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए सन् 2024 में केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय ने छऊ नृत्य को शास्त्रीय नृत्य का दर्जा दिया है।

झारखण्ड में बिरहोर, असुर, करमाली लोहरा, चिक बड़ाईक आदि जनजातियाँ हैं जो हस्तकला में निपुण हैं। बिरहोर पेड़ों की छाल से रस्सी बनाते है जो बहुत ही मजबूत होता है। महली बॉस से निर्मित टोकरी, सूप, दउरा, पटिया आदि तैयार करते हैं। करमाली और लोहरा लोहे के बर्तन बनाते हैं। वहीं असुर जनजाति लोहे गलाने का कार्य करती हैं। दुनिया को लोहा गलाने की तकनीक असुर की देन है।

परंपरागत न्याय व्यवस्था

झारखण्ड के आदिवासी समुदाय में विभिन्न प्रकार के आपसी विवादों को निपटाने के लिए मुण्डा–मानकी शासन व्यवस्था, ढोकलो सोहोर, पड़हा पंचायत, मांझी परगना शासन व्यवस्था पाई जाती हैं जो स्वयं ही विवादों का निपटारा करती हैं। इसमें उनके ही समुदाय के सदस्य शामिल रहते है। इनमें दण्ड के रूप में सामुदायिक सेवा का प्रावधान बहुत ही महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए दण्ड के रूप में पूरे गाँव को भोजन कराने को कहा जाता है या 100 पौधे लगाने का आदेश दिया जाता है। इसी से प्रेरित होकर भारतीय न्याय संहिता (BNS) में सामुदायिक सेवा को शामिल किया गया है जो इसकी महता को प्रमाणित करता है।

CONCLUSIONS

इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली में झारखण्ड की जनजातियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। अपने देशज ज्ञान के बल पर उन्होंने इसे एक नई दिशा दी है। इससे विश्व के ज्ञान, समझ में अभूतपूर्व प्रगति हो सकती है। पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान, कला, शिल्प, आजीविका के साधनों, पर्यावरण के संरक्षण के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी इनके पास ज्ञान का भंडार है जिस पर शोध करने की आवश्यकता है। इनके समुचित प्रचार–प्रसार से संपूर्ण मानवता का कल्याण हो सकता है। इस दिशा में राँची स्थित जनजातीय शोध संस्थान शोधरत है।

REFERENCES

उपाध्याय, वी.एस. एण्ड गया पाण्डेय (1993): *हिस्ट्री ऑफ एंथ्रोपोलोजिकल थौट* दिल्ली: कंसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी

2002 : *विकासात्मक मानवविज्ञान* भोपालः मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी

2002 : *ट्रायबल डेवलपमेंट इन इंडिया* राँचीः क्राउन पब्लिकेशन

चट्टोपाध्याय, के.पी. (1965) : *संथाल वे ऑफ लाइफ* कोलकाता

तिवारी, सुनील कुमार (2005) : *झारखण्ड की रूपरेखा* राँची : शिवांगन पब्लिकेशन

.

पाण्डे, गया (2001) : *आर्टिजन ट्राइब्स ऑफ बिहार एण्ड बंगाल* दिल्ली : कांसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी

2002 : *ट्राइबल डेवलपमेंट इन इंडिया* दिल्ली : कांसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी